

मध्य प्रदेश के छह वरिसत स्थल यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल चर्चा में क्यों?

हाल ही में मध्य प्रदेश के छह वरिसत स्थलों को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की अस्थायी सूची में शामिल किया गया है।

मुख्य बटु:

- नई सूची में शामिल स्थलों में ग्वालियर का कला, धमनार का ऐतिहासिक समूह, भोजेश्वर महादेव मंदिर, चंबल घाटी के रॉक कला स्थल, खूनी भंडारा, बुरहानपुर और रामनगर, मंडला का भगवान स्मारक शामिल हैं।
- वर्ष 2010 में भूमिगत जल संरचना खूनी भंडारा को यूनेस्को की विश्व धरोहर की सूची में शामिल करने के प्रयास शुरू किये गए।
- वर्ष 2013 में यूनेस्को की एक टीम इस संरचना को देखने आई थी। उनके द्वारा बताई गई सभी कमियों को दूर किया गया।
- अब जिला प्रशासन, नगर नगिम प्रशासन और मध्य प्रदेश सरकार ने यहाँ सुविधाएँ मुहैया कराने के लिये कार्ययोजना तैयार की है।

खूनी भंडारा



- यह एक भूमिगत जल प्रबंधन प्रणाली है जिसमें मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिले के ऐतिहासिक शहर बुरहानपुर में निर्मित आठ वॉटरवर्क्स शामिल हैं।
- बुरहानपुर की ये मुगलकालीन जल संरचनाएँ भारत की सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जल प्रणालियों में से एक हैं।
- बुरहानपुर में इन जल प्रणालियों का निर्माण औरंगाबाद और बीदर के मौजूदा ऐतिहासिक शहरों की तरह ही फारसी कनात दृष्टिकोण पर वर्ष 1615 में किया गया था।

ग्वालियर कला



- ग्वालियर कला मध्य प्रदेश के ग्वालियर के पास एक पहाड़ी कला है। यह कला कम-से-कम 10वीं शताब्दी से अस्तित्व में है और कला में पाए गए शिलालेखों तथा स्मारकों से संकेत मिलता है कि यह 6वीं शताब्दी की शुरुआत में अस्तित्व में रहा होगा।
- इस पर हूणों, गुर्जर-प्रतहारों, कच्छपघातों, तोमरों, लोदियों और मुगलों जैसे कई राजवंशों का कब्जा रहा है।
- कला में कई मंदिर और संरचनाएँ हैं।

धमनार का ऐतिहासिक समूह



- धमनार की गुफाएँ मध्य प्रदेश के मंदसौर ज़िले के धमनार गाँव के पास एक पहाड़ी पर स्थित हैं।
- इस रॉक कट साइट में लेटराइट पहाड़ी में खुदी हुई विभिन्न आकार की कुल 51 गुफाएँ हैं।
- पहाड़ी में संरचनाओं के दो समूह हैं, बौद्ध गुफाओं की शृंखला और हद्वि मंदिर परिसर जिसे धर्मराजेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है, जिसे धर्मनाथ मंदिर भी कहा जाता है।

भोजेश्वर महादेव मंदिर



- भोजेश्वर मंदिर मध्य प्रदेश के भोजपुर गाँव में एक अधूरा हट्टि मंदिर है ।
- माना जाता है कि मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में परमार राजा भोज के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ था ।
- निर्माण को अज्ञात कारणों से छोड़ दिया गया था, आस-पास की चट्टानों पर वास्तुशिल्प योजनाएँ उकेरी गई थीं ।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/six-madhy-pradesh-heritage-stes-included-in-tentative-unesco-list>